गुरु-वाणी

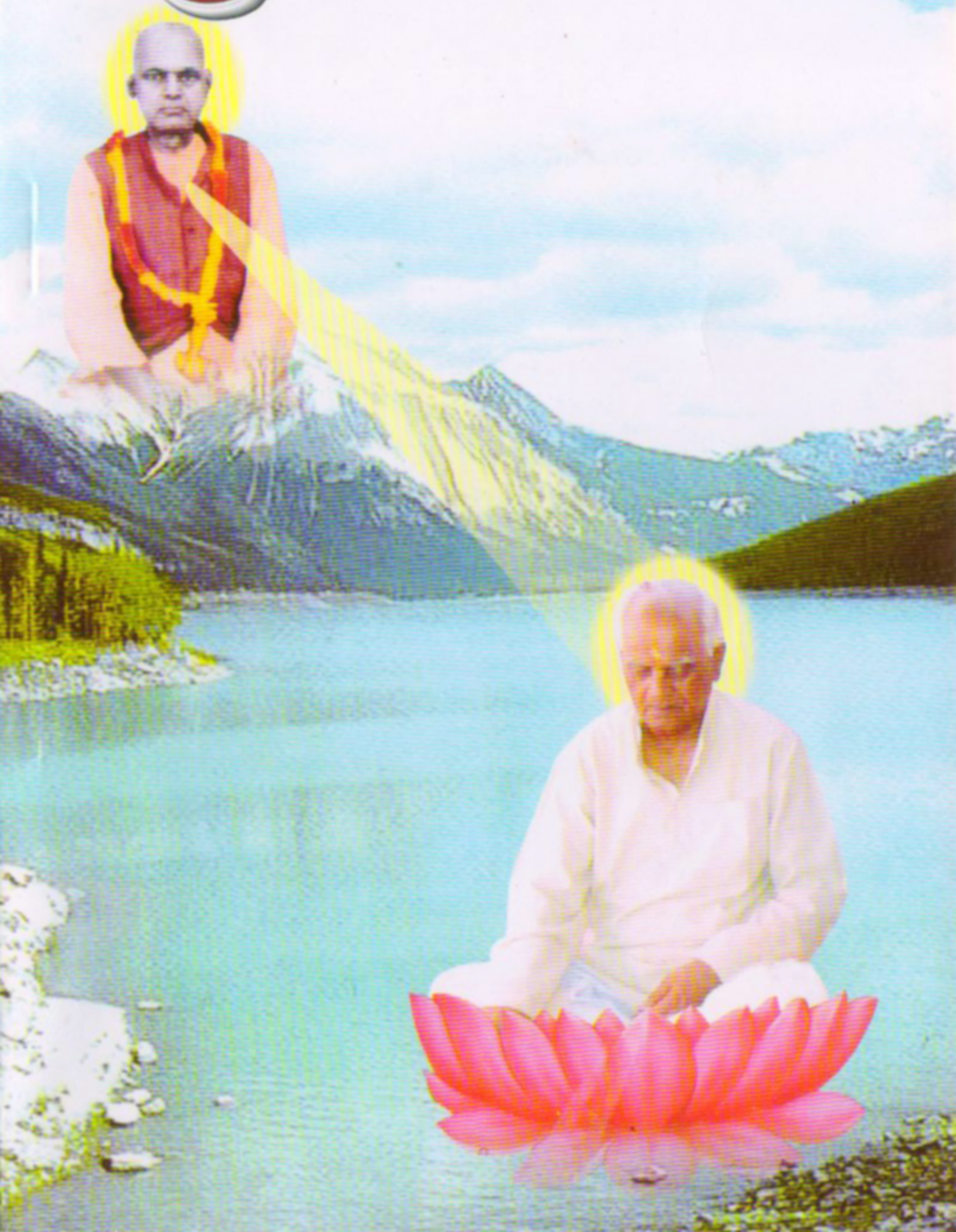

गुरू-वाणी

(परमसन्त समर्थ सद्गुरू श्री भवानी शंकर जी)

"भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्॥

ॐ

श्री गुरूवे नमः

गुरू-वाणी

(12-01-2013)

- गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
  गुर्रूसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवेः नमः।।

- वन्दे बोधमयं नित्यं गुरूं शंकर रुपिणम्।
  यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।

- अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तमेव सचराचरम।
  तत्पदं दर्शितमेव तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

प्रधान संरक्षकः

ब्रह्मलीन परम संत श्री कृष्ण दयाल जी
(पापा जी, इलाहाबाद)

संरक्षकः

डा0 स्वामी जी
(ग्वालियर)

संपादक :

श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव

संपादक मण्डल :

डा0 रश्मि खरे
डा0 कृपा किन्जलकम्
डा0 किसलय

प्रकाशक एवं वितरक :

व्यवहारिक आध्यात्म संस्थान
859, पुराना कटरा
इलाहाबाद

सचल दूरभाष : 09451325344, 9415316896

परम संत श्री भवानी शंकर जी(चच्चा जी साहब)

परम संत श्री रघुवर दयाल जी

परम संत श्री चतुर्भुज सहाय जी

परम संत श्री राम चन्द्र जी महाराज
(लाला जी साहब)

परम संत श्री श्याम लाल जी

परम संत श्री बृज मोहन लाल जी

परम संत श्री कृष्ण लाल जी

(श्री लाला जी साहब द्वारा आध्यात्मिक प्रतिनिधायन)

आध्यात्मिक प्रतिनिधायन

ब्रह्मलीन परमसन्त श्री भवानीषंकर जी (चच्चाजी)

शाखा, उरई

श्री लाला जी महाराज

श्री चच्चा जी महाराज

डा0 जयदयाल जी

श्री कृष्ण दयाल जी

डा0स्वामी जी

डा0 कृष्णा जी

क्रमशः ......

...... क्रमशः आध्यात्मिक प्रतिनिधायन (पूर्व पृष्ठ से आगे)

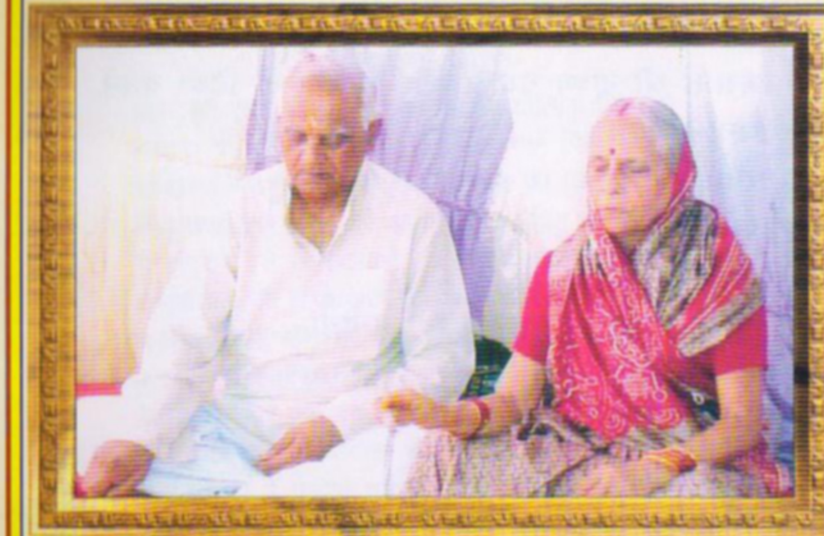

श्री कृष्ण दयाल जी एवं श्रीमती शक्तिबाला जी

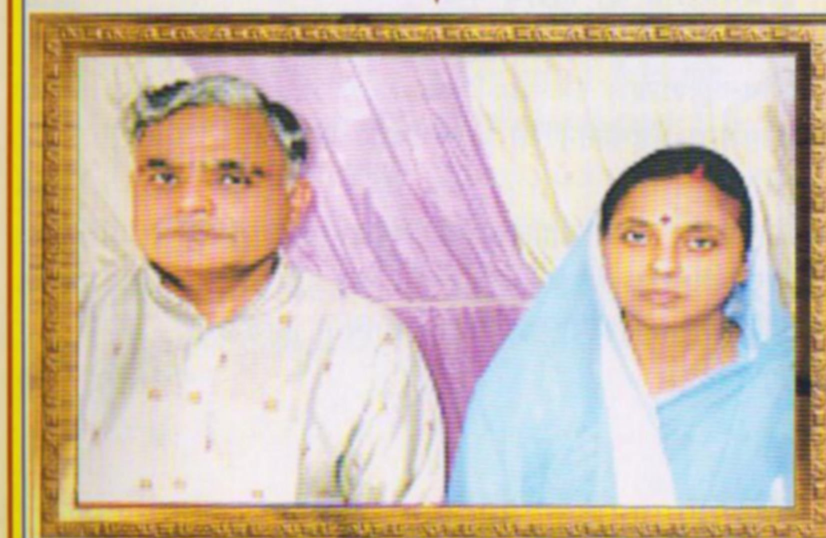

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव एवं श्रीमती जयश्री श्रीवास्तव

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृ०सं०
1.	अपनी बात	9
2.	परमसन्त श्री कृष्ण दयाल जी महाराज के दिव्य वचन	10
3.	साधना–विधि	14
I.	आरती	
II.	चौपाईया	
III.	प्रार्थना एवं ध्यान	
IV.	चच्चा चालीसा एवं राधा दादी वन्दना	
V.	सतपंच चौपाई /सुन्दर काण्ड /उत्तर काण्ड	
VI.	चौपाईया	
VII.	समापन	
VIII.	आरती	
IX.	अमृत वचन प्रिय चौपाइया, भजन	
X.	सार्वभौम प्रार्थना	
4.	विजयदशमी की विशेष पूजा	52
5.	परमसन्त ब्रहमलीन श्री कृष्णदयाल जी का जीवन दर्शन	57
6.	परमसन्त ब्रहमलीन श्री कृष्णदयाल जी का अन्तिम सन्देश	60
7.	पूज्य परम सन्त ब्रह्मलीन श्री कृष्णदयाल जी (पापा जी) द्वारा अधिकृत शिष्य	68
8.	अधिकृत केन्द्रो पर आयोजित वार्षिक कार्यकमो का विवरण	70

अपनी बात

परमपूज्य सन्त श्री कृष्णदयाल जी आध्यात्मिक विद्या से अत्यन्त परिपूर्ण थे। उन्होने न केवल अपने पिता व गुरु परमसन्त सदगुरु देव श्री भवानी शंकर जी (चच्चा जी उरई) के आध्यात्मिक कार्यो को आगे बढ़ाया अपितु उन्ही की शिक्षा के अनुरुप इसे जनकल्याण का साधन समझा ।पूज्य कृष्णदयाल जी ने अध्यात्म को कर्मकाण्ड रहित तथा अत्यन्त सरली कृत रुप प्रदान किया, जिससे ये अध्यात्म जनसामान्य हेतु एक अनसुलझी विद्या न रहे अपितु उनके दैनिक व्यवहार का अंग बन सके। अध्यात्म के इसी रुप को उन्होने व्यवहारिक अध्यात्म कहा ।

इस पुस्तक में उन्होने व्यवहारिक पूजा पद्धति को अत्यन्त सरल रुप में प्रस्तुत किया है। दैनिक पूजा पाठ अथवा विशेष अवसर (बसन्तपंचमी, रामनवमी दीपावली पंचमी आदि) पर प्रस्तुत पुस्तक की अनुसरण करके पूर्ण आध्यात्मिक व धार्मिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है । इस पुस्तक के छपने के दौरान ही परमपूज्य सन्त श्री कृष्णदयाल जी ब्रह्मलीन हो गए। उनकी त्रयोदशी संस्कार के अवसर पर उनकी चिरअभीप्सित पुस्तक जनकल्याणर्थ श्रद्धान्जलि स्वरुप प्रस्तुत है तथा प्रस्तुत पुस्तक की त्रुटियों का निवारण परिवर्ती संस्करणों में किया जायेगा।

दिनांक – 5-1-2013 (डा0 स्वामी जी)

स्थान – इलाहाबाद

परम सन्त श्री कृष्णदयाल जी के दिव्य वचन

आध्यात्मिक विकास का मूल मंत्र एवं आधारशिला 'भाव' है। 'भाव' पहले विचार के रुप में जन्म लेता है। परन्तु जब उसको जिया जाता है, तो वह प्रतिदिन पुष्ट होकर सबल संस्कार के रुप में परिवर्तित होता हुआ आध्यात्मिक स्थिति को प्रभावित करता है। ऐसे ही महान सन्त परम पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज ने अध्यात्म का सरलीकरण करते हुये आचरण एवं व्यवहार को भावपूर्ण बनाने के लिये अत्यन्त बल दिया। उनका जिससे भी सम्बन्ध हुआ उसके आचरण , व्यवहार एवं भाव का उन्होनें अपनी शक्ति से शोधन करते हुये लोगो का मार्गदर्शन किया। पूज्य गुरुदेव एक गृहस्थ सन्त के रुप में मानव कल्याण के लिये इस धरा पर अवतरित हुये थे । अपने सन्तो के समक्ष उन्होने अध्यात्म का अत्यन्त सरल एवं सहज रुप प्रस्तुत किया जिस पर सुगमता से चल कर मनुष्य अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। कर्तव्य पालन और सदाचार को अध्यात्म की आधारशिला बनाते हुये उन्होने कहा " सदाचारी पुरुष को कोई तप या साधन की आवश्यकता नही रह जाती , वह कर्मयोग द्वारा ब्रह्म की आत्मव्यता को प्राप्त कर लेता ह"। गुरु में पूर्ण निष्ठा एवं सर्मपण शिष्य में अनन्त सम्भावनाओं के द्वार खोल देती है।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज के चार पुत्र है उनके शब्दो में "उनके चारो पुत्रों में आध्यात्मिक विद्या का बीज गर्भकाल से पड़ा है और समय आने पर वह स्वंय प्रकट होंगे"। पूज्य चच्चा जी की आज्ञानुसार उनके चारो पुत्र उनके आध्यात्मिक कार्य को अपने अपने क्षेत्रो में आगे बढ़ा रहे है और जनकल्याण में लगे हुये है।

वास्तव में आध्यात्म का मूल आधार साधना है। साधना जीवन का कोई खण्ड या अंश नहीं है , वह समग्र जीवन है। मनुष्य का आचार –व्यवहार इत्यादि सभी साधनामय होना चाहिये । जीवन ऐसा जिये कि सारा जीवन ही पूजा और प्रार्थना बन जाये। विद्या कोई भी हो, लौकिक या आध्यात्मिक उसके सारतत्व को समझने के लिये गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु मनुष्य के अन्दर व्याप्त अज्ञान रुपी अन्धकार को अपने ज्ञान के प्रकाश से दूर कर देता है। मानव जीवन अत्यन्त दुलर्भ है यह जन्म बार बार नहीं मिलता। मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति है। परमात्मा ज्ञेय है। अज्ञेय नही । इसकी अनुभूति सदगुरु के माध्यम से संभव है। जब जीवन में सदगुरु की प्राप्ति होती हैं तभी मनुष्य मुक्ति की और अग्रसर होता है। सदगुरु एक आईने के समान होता है जो अपने भक्तो को उनके रुप के बारे में दर्शाता है। आत्म–ज्ञान के पश्चात सदगुरु की शरण मैं आया व्यक्ति अपने विचारो से मुक्त होकर श्रेष्ठ

जीवन जीने लगता है। पूर्णता सदगुरु से आती है। ज्ञान योग भक्तियोग कर्म योग प्रत्येक के अन्त में यही कहा गया है कि गुरु कृपा बिना यह सब असम्भव है।

गुरु बिन भवनिधि तरहि न कोई,
जो विरंचि शंकर सम होई।

मेरा स्वास्थय निरन्तर गिरता जा रहा है । समाज की असन्तोष जनक स्थिति को देखते हुये जनकल्याण की भावना से मैने "पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज की सूक्ष्म सहमति से कुछ विशेष लोगो को जिनकी पूज्य गुरुदेव में अटूट निष्ठा एवं सर्मपण है" अधिकृत किया है जिसमें प्रथम चरण में 1995 में श्री काशी प्रसाद, डा0 केवी लाल एवं श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव है एवं द्वितीय चरण में 2006 में श्री सत्य प्रकाश, श्री दिलीप कुमार, श्री महेन्द्र कुमार, श्रीमती मुन्ना (कानपुर), श्री राधाकृष्ण खरे एवं सुश्रीदया गुप्ता है। इन लोगो का पूज्य गुरुदेव में अटूट सर्मपण एवं आस्था है।ये लोग पूज्य गुरुदेव के जनकल्याण के कार्यो को आगे बढ़ाते रहेगें।

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्तो में से एक है उन पर पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा है। मेरे सभी सांसारिक एवं आध्यात्मिक कार्यो को वे आगे बढ़ायेगें और उनके सम्पर्क में आने से लोगो को वही लाभ होगा जो मेरे पास आने से होता है।

पूज्य गुरु देव के शिष्य एवं भक्तों के लिये पूज्य गुरुदेव की 'चालीसा' तथा राधा दादी वन्दना उनके समय में पढ़ी जाने

वाली "सत पंच चौपायी" पूज्य गुरुदेव और मेरी रामचरित मानस की प्रिय चौपाइया एवं पूज्य गुरुदेव के महत्वपूर्ण अमृत वचन और मेरे प्रिय भजनो को संकलित कर एक पुस्तक का रुप दिया गया है। किसी भी अवसर पर इसका पाठ करने से लोगो को विशेष लाभ होगा और उनकी मनोकामना सिद्ध होगी । यह एक सिद्ध पुस्तक होगी । इस पुस्तक को पूजा का अंग बना लेना लाभ प्रद होगा।

गुरुदेव की कृपा से सबका भला हो –

ॐ शान्ति : शान्तिः शान्तिः ।
ॐ शान्ति : शान्तिः शान्तिः ।
ॐ शान्ति : शान्तिः शान्तिः ।

कृष्णदयाल

श्री गुरूवे नमः

साधना–विधि

पूज्य गुरूदेव द्वारा प्रस्तुत पुस्तक में विस्तृत रूप में पूजा/साधना पद्धति को समझाया गया है जिसमें गुरूदेव की आरती से प्रारम्भ करते हुये कुछ चौपाईयों के बाद प्रार्थना एवं ध्यान किया जायेगा। तत्पश्चात् 'श्री चच्वा चालीसा', राधा दादी वन्दना 'सत पंच चौपाई पूज्य गुरूदेव के अमृत वचन रामचरित मानस की चौपाईया व भजन किया जायेगा।

साधकों की सुविधा देखते हुये इस विस्तृत पद्धति को गुरूदेव (पापा जी) ने तीन भाग में विभक्त किया है।

प्रथम भाग – दैनिक जीवन की पूजा

(1) आरती
(2) चौपाई, ध्यान व प्रार्थना
(3) चच्वा चालीसा एवं राधा दादी वन्दना
(4) चौपाईयां, अमृत वचन
(5) भजन (कोई एक)

द्वितीय भाग – विशेष अवसरों पर

जिस क्रम में पद्धति दी गयी है उसका अनुसरण किया जाए।

तृतीय भाग – विजय दशमी के विशेष अवसर पर

विशेष अवसरों पर की जाने वाली पूजा के साथ विजय दशमी की विशेष पूजा

आरती

बन्दउँ गुरु पद कंज , कृपा सिन्धु नर रुप हरि ।
महा मोह तम पुंज , जासु वचन रवि कर निकर ।।
आरती सदगुरू चरनन की, करहुं मन–नख–दुति किरनन की।
नयन कमलन की अनुहारी,
है चितवन पाप–ताप हारी,
लाल है पान, अजब मुस्कान
श्रवन को अमृत वचनन की। करहुं मन–नख–दुति किरनन की।
ह्रदय है दया क्षमा भण्डार
करन सों करत अधम उद्धार
दरस की आस, हरत भवत्रास
नाव दृढ़ भव निधि उतरन की। करहुं मन–नख–दुति किरनन की।
नाभि ले जमुन भंवर छवि छीन
देख कटि केहरि छवि भई हीन
लेत है पीर, बंधावत धीर
काम गज मन–वन विड़रन की। करहुं मन–नख–दुति किरनन की।
चरण–रज अमृत रस कर पान
होत भव रोग नाश दुख खान
खुलेंगे नैन, मिले सुख चैन

निरन्तर गुरूजी के दरसन की। करहुं मन–नख–दुति किरनन की।

चरण नख ज्योति लख लीजे

दयालु मो पै दया कीजे

चंद्र नखकिरण ह्रदय की फिरन

दया की भीख भिखारिन की। करहुं मन–नख–दुति किरनन की।

आरती सदगुरु चरनन की। करहुँ मन नख दुति किरनन की।

श्री गुरुदेव जय गुरुदेव सदगुरुदेव जय जय गुरुदेव । 2 ।

जय शंकर जय भवानी शंकर जय शंकर जय नमो नमः । 2 ।

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति पूजा मूलं गुरुर्पदम् ।

मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरुर्कृपा ।।

गरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेः नमः ।।

तीरथ गये सो एक फल , सन्त मिले फल चार ।

सदगुरु मिलहि अनेक फल , कहत कबीर विचार ।।

चौपाईयाँ

बंदऊँ गुरूपद बारम्बारा जासु कृपा छूटहिं दुख सारा——(3)

मंत्र महामणि विषय ब्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के –(3)

यह गुन साधन ते नहिं होई, तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई –(3)

गुरू समर्थ सिर पर खड़े, कहाँ कमी तोहे दास ——(3)

गायत्री मंत्र

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहिः धियो यो नःप्रचोदयात्। ——(3)

प्रार्थना एवं ध्यान

पूज्य गुरुदेव आप बड़े दयालु, कृपालु एवं सर्वशक्तिमान हैं।
मुझसे जाने अनजाने में जो गलतियाँ हुई हों उसके लिए
आप मुझे क्षमा प्रदान करें एवं इतनी शक्तियाँ प्रदान करें कि
हम आपके बतायें मार्ग पर चलते हुए सबकी ईश्वरीय रूप से
सेवा करने में समर्थ हो। ——————(3)

(जिसकी जो समस्या हो वह बतलाऐ)

मेरी यह इच्छा है। जिसमें मेरा भला हो वह हो लेकिन
आप हमें इतनी शक्तियाँ प्रदान करें कि हम आपकी
इच्छानुसार चल सकें। ——————(3)

चच्चा चालीसा

ध्यानम्

प्रकृत्या ब्रह्मलीनो दयाकरूणापूरितनयन–
प्रेमाप्लावितह्रदयौ, सदापरहितरतवरकरौ
सदासेवासन्नद्धौ, मृदुलावपिपादाम्बुजौ
एवं गुरूदेवः ह्रदये मम निवसतु सदा।

अर्थ

जिनके नेत्र दया और करूणा से परिपूर्ण है और ह्रदय प्रेम से लबालब भरा हुआ है, दोनो श्रेष्ठ हाथ सदा दूसरों की सेवा में रत हैं, कोमल होते हुए भी चरण कमल सदैव सेवा के लिए तत्पर हैं ऐसे ब्रह्मलीन परम पूज्य गुरूदेव श्री चच्चा जी महाराज सदैव मेरे ह्रदय में निवास करें।

ऊँ श्री गुरूवे नमः

दोहा

सब दोषन के नास को, है अति सरल उपाय।
गुरू चरनन में मन रहे, सब ही होउ सहाय।।

चौपाई

बन्दऊ चच्चा पद जल जाता। जेहि सुमिरत अघ सब मिट जाता
जासु चरित समुझा नहि कोई। तेहि बरनन कहु केहिविधि होई।।
एकहि बात रहे मति मेरी। निज परिजन पर प्रीति घनेरी।
अतः प्रकृति सब क्षमावे करिहैं। जदपि दास पर अवसि वे हसिहैं।
चरित रहा जिनका अति नीका। रामदयाल गृह जनम ग्रहीता।।
मातु पितहिं परलोक सिधारे। अल्पकाल सब कष्टन धारे।।
बाल काल मन दृढ़ जिज्ञासा। मिलिहै प्रभु ये अटल विश्वासा।।
एहि विश्वास भये प्रभुलीना। सब दुख कष्ट नष्ट कर लीन्हा।।
सदाचार मय जीवन कीन्हा। प्रेम सचाई ब्रत धर लीन्हा।।
एहि भांति कछ समय बिताए। फिर प्रभु झांसि नगर में आये।।
निज दम्पति संग भ्रातृज लाए। संग अपने रख उसे पढ़ाए।।
प्रभु कंह भ्रातृज था अतिप्यारा। जो असमय परलोक सिधारा।।
भ्रातृजदुख मन ह्रदय विदारा। प्रेम मूर्ति कंह सूल अपारा।।
पत्नी संग विचार यह कीन्हा। लेहुं बिराग यह निर्णय कीन्हा।।
मर्माहत दम्पति गृह त्यागा। सदगुरू संत मिलैं मन लागा।।
चलत चलत चित्रकूटहिं आए। संत श्री राम नरायन पाए।।
चच्चा दम्पत्ति देख चकित भए। राम नरायन पुलकित भए।।
अतिथि दम्पति कहं आसन दीन्हा। बारम्बार नमन है कीन्हा।।

बोलेउ आज सिया रघुराई। आए हैं मोरे गृह भाई।।
चच्चा कहेउ उपदेसहु ताता। संत कहेउ स्वयं प्रभु भ्राता।
मैं तुम्ह कहा उपदेसहु स्वामी। आज धन्य मोहि कीन्हभवानी।।
बृथा परिश्रम दिवस गंवाए। नहिं कोऊ सदगुरू सम मन भाए।।
मौनी संत ऋषिकेश निवासा। भ्रमत भ्रमत प्रभु पहुंचेउ पासा।।
कहेउ संत कलिकाल है भाई। दुर्लभ गुरू पारस की नाई।।
विषयी व्यक्ति वेश धर लीन्हा। जे सर्वत्र प्रदूषण कीन्हा।।
वापस होउ गृहस्थ में भाई। जहाँ समरथ सदगुरू तुम पाई।।
बचन सुने गृहस्थाश्रम आए। उचित समय लाला जी पाए।।
प्रथमहि भेटिं भए अधिकारी। ब्रह्मलीन जदपि तन धारी।
शिष्य बनन गवनेउ थे ताता। सदगुरू बन लौटे गृह नाथा।।
लखि गुरूतर दायित्व गुरू के। लाला सन कह बचन ह्रदय के।।
नाथ मोहि निज चरनन रखिए। यह दायित्व औरन कंह दीजै।।
है अति कठिन काज ये स्वामी। सब तुम जानहु अन्तर्यामी।।
तव लाला प्रबोध अस कीन्हा। सकल रहस्य सुबोध कर दीन्हा।।
मत समझहु तुम करिहउ भाई। सोच सोच बृथा अकुलाई।।
जो तुम्ह तनिकउ प्रीति करिहैं। तिनकी रखवारी हम करिहैं।।
तब ते पर दुख हरन मगन भए। सुमिरत सेवक कष्ट नष्ट भए।।
कैसहुं, प्रभु कहं जानन हारे। कृपा अहैतुक पावन हारे।।
निज जन अजहुं उन्हें अतिप्यारे। बिगरी अबहुं बनावन हारे।।
निज कंह भाव से बाँधन हारे। सुमिरत ही प्रभु साथ हमारे।
सबके कलिमल धोवन हारे। सेवारत पर लोक सिधारे।।

दोहा :–

कैसहु सेवक कष्ट परै, सुमिरन उनका कीन्ह।
सकल दुखनके प्रभंजन, नासे जल बिन मीन।।
सबकी सेवा होत रहै, निदेसहु जय दयाल।
सुसमय स्वामीकृष्णजी, सम्प्रति कृष्ण दयाल।।
चच्चा चालीसा पढ़ै, नासै दुख की रैन।
लखि निज पितु की सदगति भर आवत है नैन।।

राधा दादी वन्दना

(परम पूज्य ब्रह्म लीन सन्त श्री चच्चा जी महाराज के सुपुत्र परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी की यह उत्कट इच्छा थी कि चच्चा–चालीसा की तरह, पूज्य चच्चा जी की धर्म पत्नी ब्रह्मलीना श्रीमती राधामातेश्वरी पर भी कोई सूक्ष्म बन्दना , ऐसी हो जिससे उनके गृहस्थ तथा आध्यात्मिक जीवन की झांकी दिख जाये जो साधकों के लिये प्रेरणा दायक हो । उनका विशेष आग्रह था कि आध्यात्मिक उन्नति के लिये पूज्य चच्चा जी ने नर नारी सहयोग तथा पवित्र गृहस्थ आश्रम पर बहुत जोर दिया है। अतः चच्चा–चालीसा के साथ दादी बन्दना का पाठ किया जाय तो आध्यौत्मिक दृष्टि से यह अपने आप में उसी तरह पूर्ण होगा जैसे– श्री राम के साथ सीता ,श्री कृष्ण के साथ राधा, श्री शिव के साथ शक्ति , तथा श्री ऋषि अत्रि के साथ माता अनुसुइया का स्मरण होता है। इसके अलावा अनेक ऐसे. गृहस्थ सन्त है जिनकी धर्म पत्नी अपने पातिव्रत धर्म तथा पवित्र गृहस्थ आश्रम के बल पर अध्यात्म के उच्चतम शिखर पर आसीन रही है। अतः निसन्देह ईश्वर अथवा परम सन्तो का सपत्नीक स्मरण प्रत्यके दृष्टि से अध्यात्म जगत में लाभ प्रद है।

पूज्य पापा जी (परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी) ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में 'राधा दादी वन्दना' को अपनी स्वीकृति एवं आशीर्वाद दिया है। जो उनकी इच्छा अनुसार चच्चा चालीसा के साथ प्रकाशित की जा रही है जिससे साधको को चच्चा चालीसा तथा राधा दादी वन्दना के सम्मिलित पाठ में सुविधा हो सके तथा उसका आध्यात्मिक लाभ मिल सके ।

पूज्य दादी जी के विषय में हम लोगों ने केवल सुन रखा था परन्तु जो कुछ सुना है। वह अत्यन्त प्रभावो उत्पादक तथा मर्म स्पर्शी है। चच्चा जी के सत्संग का प्रत्येक सदस्य उनसे मातृवत वात्सल्य पाता था। न जाने कितने लोगों को जिनके सिर पर किसी का साया नहीं था, दादी जी ने उनका पुत्रवत लालन – पालन करते हुये उनके विवाह आदि

की भी रस्में पूरी की और उनके जीवन में किसी भी भावनात्मक अभाव को दिल से पूरा किया ।

वे इस दुनियों के कर्तव्य को पूरा करते हुये प्रति क्षण चच्चा जी में लीन , रहते ,हुये, आश्चर्य चकित कर देने वाली दया करुणा और ममता की साक्षात मूर्ति थी। इस वन्दना का मूल कथ्य , सवेद्य और सन्देश यही है कि , ऐसी पतिव्रता नारी के नमन मात्र से ही साधकों का पूर्ण आध्यात्मिक कल्याण सम्भव है।)

(ओम प्रकाश श्रीवास्तव)

(PCS)

रचयिता

कुण्डलिनी

गृहस्थाश्रम तप के लिये नर नारी सहयोग
है जरुरी जगत में चच्चा कीन्ह प्रबोध
चच्चा कीन्ह प्रबोध अतः दादी का वन्दन
चच्चा संग जो रही , रहे ज्यों पानी चन्दन
दीन और दुनिया जहाँ पल पल करे सलाम
ऐसी पतिव्रता नारि को बारम्बार प्रणाम
बारम्बार प्रणाम करहुँ मन से अवगाहन
श्रवन सुजस सुनि चरित रचित मालिक अनुशासन

<u>सवैया</u>

मइया जो रखइया सबकी प्यार की जुन्हैया थी ,
जो सबरै सिखन्ह की एक महतारी थीं ।

चच्चा जैसे सन्त की अखण्ड सन्ताई जो,
ऐसी एक देवी दादी राधा हमारी थीं।
शिव की शक्ति ज्यों राधा घनश्याम की ज्यों ,
राम की सिया त्यों चच्चा जी के साथ थीं ।
विन तव कृपा नहि चच्चा अर्चन पूरन है,
इस हेतु मातु तव पूजन और अराधन हैं।
घर और गृहस्थी कौ जीवन ऐसो जी गई,
सब ही के लाग एक मिसाल कायम कर गयी।
घर में ही छिपा है सन्मार्ग ऊँची सोच का,
धीरे धीरे बनता आधार जो मोक्ष का ।
गृहस्थाश्रम में मिटता है पूरा मेरा तेरा पन ,
धीरे धीरे आता है दया, प्रेम, अपना पन ।
पाति व्रत धर्म का संदेश सब नारियों को ,
अपना उदाहरण दे दिल में उतार गयी ।
चच्चा जी को तनिक भी उदास न होने दिया
उनके कहे विन सब ही समझ लिया ।
शक्ति थी अनुपम जैसे सब कुछ देखती हों,
पल पल पिय हिय की जानन हारी हों ।
चच्चा का परिवार बड़ा था हर सत्संगी बेटा था ,
वत्सलता से सबको अपने में समेटा था ।
खान पान लालन पालन शिक्षा और सगाई भी,
जिसका कोई नही माता रस्में तूने निभाई थीं।

याद में आपकी सबको रोते देखा है ,
लिखा आप पर काव्य किसी ने , प्रभु को आप में देखा ।
पाति व्रत धर्म का सीधा सा ये खेल है,
जिसमें चच्चा के आशीष का मेंल है।
साधना की अलग न कोई जरुरत है,
आप के नमन में सबही समाहित है।
रोम रोम नमन करें श्वास श्वास आरती ,
जन्म और जन्मान्तर के सारे पाप काटती ।
मन को मैल छटे दिल को सबद जगे,
चकन्हु की शक्ति सब जाग जाग उठी फिरैं।
उनको नमन करैं जीवन सफल करैं ,
मूल मंत्र एकहीं बस भाव से जुड़े रहे ।

दो0

चच्चा चालीसा पढ़ै इस वन्दन के साथ ।
उनके सिर पर सदा रहे दादी चच्चा के हाथ।।
अन्तिम क्षणों में किसी तरह हुआ अनुपालन नाथ।
क्षमा करहुँ सब भूल को सब इज्जत तेरे हाथ ।।

जय गुरूदेव

सत पंच चौपाई

सम्पुट –

1– मंत्र महामणि विषय व्याल के मेटत कठिन कुअंक भाल के।
यह गुन साधन ते नहि होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई।।

2– मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाए निज सहज सरूपा।

3– सन्मुख होहि जीव मोहि जबही, जन्म कोटि अघ नासहि तबही।।

(तीनों में से कोई एक सम्पुट सत पंच चौपाई के प्रत्येक काण्ड के पहले, तीन बार होगा)

नोट :– यदि सुन्दर काण्ड अथवा उत्तर काण्ड का पाठ होगा तो वह भी किसी एक सम्पुट के साथ होगा।

श्लोक – भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्।।
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरूं शंकररुपिणम्।
यमाश्रितोहि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।

दोहा – अनुज जानकी सहित प्रभ, चाप वाणधर राम।
मम हिय गगन इन्दु इव, बसहुँ सदा निष्काम।।

सो – जो सुमिरत सिधि होई गन नायक करिबर बदन।
करऊ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुनसदन।
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन।
नील सरोरूह स्याम तरून अरून बारिज नयन।

करउ सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर सयन।।
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करूना अयन
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन।।
बंदऊं गुरू पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर।।
प्रवनउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान धन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

बालकांड

एहि महँ रघुपति नाम उदारा, अति पावन पुरान श्रुतिसारा।
मंगल भवन अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपति पुरारी।
बन्दउँ नाम राम रघुवर को, हेतु कृसानु भानु हिमकर को।
महामंत्र जोइ जपत महेसू, कासी मुकुति हेतु उपदेसू।
महिमा जासु जान मन राऊ, प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।
आखर मधुर मनोहर दोऊ, बरन बिलोचन जन जिय जोऊ।
नाम प्रसाद संभु अबिनासी, साजु अमंगल मंगल रासी।
सुक सनकादि सिद्धि मुनि जोगी, नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी।
नारद जानेउ नाम प्रतापू, जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू।
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।
ध्रुवं सगलानि जपेउँ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ।
सुमिरि पवनसुत पावन नामू अपने बसि कर राखे रामू।
अपतु अजामिलु गजु मनिकाऊ, गए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ।
कही कहौं लगि नाम बड़ाई, रामु न सकहि राम गुन गाई।

राम नाम कलि अभिमत दाता, हित परलोक लोक पितु माता।
नहि कलि करम न भगति बिबेकू, राम नाम अवलबन एकू।
भायँ कुभाय अनख आलसहूँ, नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।
मोर सुधारिहि सो सब भाँती, जासु कृपा नहि कृपाँ अघाती।
राम सुस्वामि कुसेबक मो सो, जिन दिसि देखि दयानिधि पोसो।
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती, बिनय सुनत पहिचानत प्रीती।
रीझत राम सनेह निसोतें, को जग मंद मलिन मति मोते।
जब मंगल गुन ग्राम राम के, दान सुकृति धन धरम धाम के।
मन्त्र महामणि विषय व्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के।
अभिमत दानि देव तरूवर से, सेवत सुलभ सुखद हरिहर से।
जौ अनाथ हित हम पर नेहू, तौ प्रसन्न होइ यह वर देहू।
जौ स्वरूप बस शिव मन माही, जेहि कारण मुनि यतन कराही।
जौ भुसुंडि मन मानस हंसा, सगुन अगुन जेहि निगस प्रसंसा।
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई, भजत कृपा करि हहिं रघुराई।
राम करौ केहि भाँति प्रसंसा, मुनि महेश मन मानस हंसा।

अयोध्या कांड

प्राण नाथ तुम्ह बिनु जग माही, मो कहुँ सुखद कतहुँ कछ नाही।
गुरू पितु मातु न जानउँ काहू, कहउँ सुभाउ नाथ पति आहू।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई, प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी, दीनबन्धु उर अंतरजामी।
मन क्रम बचन चरन रत होई, कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई।
सकल सुकृत कर बड़ फल एहू, राम सीय पद सहज सनेहू।

होई बिबेकु मोह भ्रम भागा, तब रघुनाथ चरन अनुरागा।
अब करि कृपा देहु वर एहू, निज पद सरसिज सहज सनेहू।
जग पेखन तुम्ह देख निहारे, विधि हरि संभु नचावनि हारे।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा, औरू तुम्हहि को जाननिहारा।
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई, जानत तुम्हहि तुम्हई होइ जाई।
आन उपाय मोहि नहि सूझा, को जिय कै रघुबर बिनु बूझा।
राम सदा सेवक रूचि राखी, वेद पुरान साधु सुर साखी।
मोरे सरन रामहि की पनही, राम सुस्वामि दोसु सब जनही।
जासु नाम पावक अघ तूला, सुमिरत सकल सुंमगल मूला।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ, कोउ न राम सम जान जथारथ।
देउ देवतरू सरिस सुभाऊ, सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ।
अब करूनाकर कीजिअ सोई, जन हित प्रभु चित छोभु न होई।
सील सकोच सिंधु रघुराऊ, सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ।
जोगु कुजोगु ग्यान अग्यानू, जहँ नहि राम पेम परधानू।
प्रभु पितु मातु सुह्रद गुर स्वामी, पूज्य परम हित अंतरजामी।
सरल सुसाहिबु सील निधानू, प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू।
समस्थ सरनागत हितकारी, गुन गाहकु अवगुन अघ हारी।
राउरि रीति सुबानि बड़ाई, जगत बिदित निगमागम गाई।
को साहिब सेवकहि नेवाजी, आप समाज साज सब साजी।
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा, सबहि भाँति भल मानेउ मोरा।
अबिनय बिनय जथारूचि बानी, छमिहि देउ अति आरति जानी।
प्रभु पद पदुम पराग दोहाई, सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई।
सो करि कहउँ हिए अपने की, रूचि जागत सोवत सपने की।

अग्या राम न सुसाहिब सेवा, सो प्रसादु जन पावै देवा।

अरण्य कांड

निज कृत कर्म जनित फल पायउँ, अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ।

नाथ सकल साधन मैं हीना, कीन्हीं, कृपा जानि जन दीना।

मोरें जियँ भरोस दृढ़ नाहीं, भगति विरति न ग्यान मन माही।

नहिं सतसंग जोग जप जापा, नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा।

एक बानि करूना निधान की, सो प्रिय जाके गति न आन की।

तदपि अनुज श्री सहित खरारी, बसतु, मनसि मन कानन चारी।

जो कोसलपति राजिव नयना, करउ सो राम ह्रदय मम अयना।

अबिरल भगति बिरति सतसंगा, वरन सरोरूह प्रीति अभंगा।

भगति वात अनुपम सुखमूला, मिलई जो संत होई अनुकूला।

सब चरन पंकज अति प्रेमा, मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा।

गुरू पितु मातु बंधु पति देवा, सब मोहि कहँ जाने दृढ़ सेवा।

जाकर नाम मरत मुख आवा, अधम उमुकुत होइ श्रुतिगावा।

जे न भजहि अस प्रभु भ्रम त्यागी, ग्यान रंक नर मंद अभागी।

किष्किंधा कांड

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें, सेवक प्रभुहि परै जनि मोरे।

नाथ जीव तब मायो मोहा, सो निस्तरइ तुम्हारेहि छोहा।

ता पर मैं रघुबीर दोहाई, जानउँ नहिं कछु भजन उपाई।

सेवक सुत पति मातु भरोसे, रहइ असोच बनई प्रभु पोसे।

अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँति, सब तजि भजनु करौ दिन राती।

नाथ विषय सम मद कछु नाहीं, मुनि मन मोह करइ छन माही।

अतिसय प्रबल देव तब माया, छूटइ राम करहु जौ दाया।

सुन्दर कांड

अब मोहि भा भरोस हनुमंता, बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता।

सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीति, करहिं सदा सेवक पर प्रीती।

जासु नाम जपि सुनहू भवानी, भव बंधन काटहि नर ग्यानी।

राम नाम बिनु गिरा न सोहा, देखु बिचारि त्यागि मद मोहा।

लंका कांड

उमा राम मृदुचित करूनाकर, बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर।

देहि परम गति सो जिय जानी, अस कृपाल को कहहु भवानी।

अब प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी, नर गतिमंद वे परम अभागी।

उत्तर कांड

देहे भगति रघुपति अति पावन, त्रिविध ताप भव दाप सावनि।

प्रनत काम सुरधेनू कलपतरू, होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह रू।

करनधार सद्गरू दृढ़ नावा, दुर्लभ साज सुलभ करिपाता।

मिलहि न रघुपति बिनु अनुरागा, किएँ जोग तप ग्यान बिरागा।

संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही, चितवहिं राम कृपा करि जेही।

गुरू बिनु भव निधि तरहि न कोई, जौं बिरंचि संकर सम होई।

सब कर फल हरि भगति सुहाई, सो बिनु संत न काहूँ पाई।

अस बिचारि जोइ कर सतसंगा, राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा।

राम कृपा नासहि सब रोगा, जो यह भाँति करे संजोगा।

सदगुरू बैद बचन बिस्वासा, संजम यह न विषय कै आसा।

रघुपति भगति संजीवन मूरी, अनूपान श्रद्धा मति पूरी।

एहि बिधि मलेहिसो रोग नसाही, नाहि त जतन कोटि नहि जाही।

सब कर मत खगनायक एहा, करिअ राम पद पंकज नेहा।

श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाही, रघुपति भगति बिना सुख नाहीं।

राम उपासक जे जग माहीं, एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीं।

एहि कलिकाल न साधन दूजा, जोग जग्य जप तप ब्रतपूजा।

रामहि सुमिरिअ गाइउ रामहि, संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहिं।

छन्द

पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना।।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप ने।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते।।
रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहि सुनहिं जे गावहि।
कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिंधावही।।
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै।
दारून अबिद्या पंच जनित विकार श्री रघुबर हरै।।
सुन्दर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को।।
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदास हूँ।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाही कहूँ।।

दोहा

मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मणि हरहू बिषम भव भीर।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहू मोहि राम।।

चौपाईयाँ

मंत्र महामणि विषय ब्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के –(3)

बंदऊ गुरूपद बारम्बारा जासु कृपा छूटहिं दुख सारा —(3)

यह गुन साधन ते नहिं होई, तुम्हरि कृपा पाव कोइ कोई —(3)

गुरू समर्थ सिर पर खड़े, कहाँ कमी तोहे दास ——(3)

समापन {
हरिओम् तत्सत् ——(3)
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ——(3)
सदगुरू भगवान की जय

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्री रामायण जी की। कीरति कलित ललित सिय–पी की

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान विसारद।

शुक सनकादि सेष अरू सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ।।1।।

आरति श्री रामायण जी की..............

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओ शास्त्र सबग्रन्थन को रस

मुनि जन धन सन्तन को सरबस। सार अंस संमत सब ही की ।।2।

आरति श्री रामायण जी की..............

गावत सन्तत संभु भवानी। अरू घटसंभव मुनि बिग्यानी

ब्यासआदि कबि बर्ज बखानी। काग भुसुंडि गरूड़ के ही की ।।3।।

आरति श्री रामायण जी की..............

कलिमन हरनि विषय–रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।

दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की ।।4।

आरति श्री रामायण जी की..............

आरती

आरती सद्गुरू चरनन की, करहूँ मन–नख दुति किरनन की।

नयन कमलन की अनुहारी।

है चितवन पाप ताप हारी

लाल है पान, अजब मुस्कान

श्रवण को अमृत बचनन की करहुं मन–नख दुति किरनन की।

ह्रदय है दया क्षमा भण्डार

करन सों करत उधम उद्धार

दरस की आस हरत भव त्रास

नाव दृढ़ भव निधि उतरन की, करहुँ मन–नख दुति किरनन की।

नाभि ले जमुन भंवर छविछीन

देख कटि केहरि छवि भई हीन

लेत है पीर, बँधावत धीर

काम गज मन वन बिड़रन की, करहुँ मन–नख दुति किरनन की

चरन रज अमृत रस कर पान

होत भव रोग नाश दुख खान

खुलेंगे नयन मिले सुख चैन

निरन्तर गुरू जी के दर्शन की, करहुँ मन–नख दुति किरनन की

चरण–नख ज्योति लख लीजे

दयालु मो पे दया कीजे

चन्द्र नख किरण, ह्रदय की फिरन

दया की भीख भिखारिन की, करहुँ मन–नख दुति किरनन की।

आरती सदगुरू चरनन की, करहुँ मन–नख दुति किरनन की।

श्री गुरूदेव जय गुरूदेव सदगुरूदेव जय–जय गुरूदेव। —(2)

जय शंकर जय भवानी शंकर जय शंकर जय नमो नमः ।2।

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति पूजा मूलं गुरुर्पदम् ।

मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरुर्कृपा ।।

गरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेः नमः ।।

तीरथ गये सो एक फल , सन्त मिले फल चार ।

सदगुरु मिलहि अनेक फल , कहत कबीर विचार ।।

अमृत वचन

(1) परमात्मा गुरूदेव श्री चच्चा जी महाराज हमेशा सदाचार पर विशेष बल दिया करते थे वे कहते थे कि सदाचारी पुरूष के लिये कोई तप या साधना की आवश्यकता नहीं रह जाती,वह कर्मयोग द्वारा ही ब्रह्म की आत्मवयता को प्राप्त कर लेता है।

(2) माता पिता को किसी भी दशा में साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिए। पिता की सेवा से जगत पिता श्री भगवान और माता की सेवा से जगत माता श्री जगदम्बा सन्तुष्ट होती है। इनकी यथाविधि सेवा किये बिना लौकिक, पारलौकिक एवं किसी भी धर्म कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए भाव और प्रेम सहित माता पिता की सेवा करना साक्षात भगवान के सगुण रूप की सेवा करना है।

(3) परिवार वालों से प्रेम करना ईश्वरीय प्रेम करने का सरल व सुगम साधन है जिसने अपने परिवार वालों से प्रेम नहीं किया, वह प्रेम प्राप्त कष्ट व दुखों का अनुभव न होने के कारण प्रेम के रहस्य से वंचित रहता है।

(4) संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, किन्तु ईश्वर भक्ति के बिना सुख की प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं, इसलिए प्रत्येक मनुष्य को किसी धार्मिक ग्रन्थ का पाठ, सत्संग तथा ईश्वर भक्ति के साधन नियमानुसार प्रतिदिन अवश्य करते रहना चाहिए।

(5) प्रत्येक कार्य में नियम की पाबन्दी का उल्लंघन न होना एक बहुत बड़ा साधन है।

(6) मन से दुखों का चिन्तन न करना ही दुःख निवारण की अचूक दवा है।

(7) यथार्थ कर्तव्य पालन वह है जिससे न अपना मन दुःखी हो न दूसरे का।

(8) जब तक मनुष्य जिये तब तक उसे भवसागर से पार होने के लिये श्री भगवान की प्राप्ति के हेतु किसी न किसी प्रकार का अभ्यास तथा साधन अवश्य करते रहना चाहिए। क्योंकि जीवन की प्रत्येक श्वास अमूल्य है। जब देहभस्म हो गयी तो पश्चाताप का भी अवसर नहीं मिलता।

(9) सच्ची प्रार्थना भाव और प्रेम सहित श्री भगवान अथवा उसके अनन्य भक्त से एक ही बार करने से उसका फल तत्काल मिलता है। सच्ची प्रार्थना करने की शक्ति प्राप्त करने के लिये नित्य प्रति नियमानुसार श्री भगवान की उपासना करते रहना चाहिए।

(10) ईश्वरीय नियम है कि श्री भगवान की उपासना के पश्चात् मनुष्य जिस इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता है वह अवश्य स्वीकृत होती है। इसलिये मनुष्य को बहुत सावधान होकर के ऐसी इच्छाओं की पूर्ति के लिये प्रार्थना करनी चाहिए जो जन्म मरण के चक्कर में न डालकर सच्चे सुख और निरंतर आनन्द देने वाली हो।

प्रिय चौपाइयाँ

(पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज अपने जीवन काल में सत्संग के दौरान अक्सर ' रामचरितमानस' एवं 'गीता' का पाठ कराया करते थे। ये दोनों ग्रन्थ उन्हें अत्यन्त प्रिय थे। उनकी इसी प्रेरणा से उनके पुत्र परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी ने रामचरितमानस की कुछ विशिष्ट सारगर्भित चौपाइयों का संकलन किया है जिनमें समस्त अध्यात्म का सार निहित है। यह सभी साधकों के लिए हितकारी है। चाहे वे किसी गुरु के संरक्षण में हो । गुरु चाहे जो भी हो किन्तु मूलतः गुरु तत्व तो एक ही है।)

1. मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाय निज सहज सरूपा।
2. सन्मुख होहि जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।
3. यह गुन साधन ते नहि होई। तुम्हारी कृपा पाय कोइ कोई।
4. बन्दउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।
5. शंकर जगत बन्द्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावहिं सीसा।।
6. जो चेतन को जड़ करहिं, जड़हिं करै चैतन्य।
   अस समर्थ रघुनायकहिं, भजहिं जीव ते धन्य।।
7. हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम से प्रकट होहिं मैं जाना।।
8. रामहिं केवल प्रेम पिआरा। जानि लेहू जो जान निहारा।
9. सिया राममय सब जग जानि। करहु प्रनामु जोरि जुग पानि।।
10. एक शूल मोहि बिसर न काऊ। गुरू कर कोमल शील सुभाऊ।।
11. एकहिं धर्म एक वृत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा।।

12. मोर सुधारहु सो सब भाँति। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

13. नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्हीं कृपा जानि जन दीना।।

14. अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँति। सब तजि भजन करहु दिन राति

15. गुरू बिन भव निधि तरहि न कोई। जो विरंचि शंकर सम होई।।

16. नाम लेत भव सिन्धु सुखाही। करहु विचार सुजन मन माही।

17. सन्त सहे दुखपर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी।

18. गुरू समरथ सिर पर खड़े कहाँ कमी तोहे दास।

उपर्युक्त चौपाइयों का अर्थ सार रूप में साधकों की सुविधा के लिए लिखा जा रहा है। वैसे तो आध्यात्मिक विकास का मूलमन्त्र 'भाव' है। यह 'भाव' जब आत्मा से या हृदय से आता है तो अध्यात्म की सारी गुत्थियाँ स्वयं ही सुलझ जाती हैं। परम सन्त श्री कृष्णदयाल जी का यह निजी अनुभव है कि यह चौपाइयाँ जब भाव के साथ आत्मसात् की जायेंगी तो साधक के सामने इसके गूढतम रहस्य स्वतः ही आ जायेंगे और इससे उन्हें जो आध्यात्मिक लाभ होगा वह अनुभव का विषय है।

प्रारम्भ की तीन चौपाईयों से यह स्पष्ट होता है कि जब शिष्य अपने सदगुरू की शरण में आता है तो उनके दिव्य प्रकाश से उसके समस्त जन्मों के पाप नष्ट होने लगते हैं और वह ईश्वर की ओर उन्मुख हो जाता है। उसे संसार की नश्वरता और जीवन के वास्तविक लक्ष्य का ज्ञान होने लगता है वह छल कपट छोड़कर ईश्वरोन्मुख हो जाता है। तब आत्म साक्षात्कार के फल के रूप में वह निज स्वरूप

को प्राप्त होता है किन्तु यह स्थिति केवल साधना से ही प्राप्त नहीं होती। सदगुरू की कृपा जब किसी–किसी पर होती है तब यह स्थिति आती है।

चौथी एवं पाँचवीं चौपाई में गुरू की वन्दना की गयी है। पूज्य गुरूदेव श्री चच्चा जी महाराज ने 'तीन' शब्द पर विशेष जोर दिया है। अर्थात् इन चौपाइयों के माध्यम से सर्वप्रथम हम अपने पूज्य गुरूदेव श्री चच्चा जी महाराज जो शिव के स्वरूप हैं और सबके कल्याणकारी हैं जिनके आगे सभी देवता–मनुष्य और ऋषि–मुनि नतमस्तक हैं उनकी वन्दना करते हैं। फिर उनके गुरूदेव श्री रामचन्द्र जी (लाला जी महाराज) और श्री रघुबर दयाल जी की वन्दना करते हैं। इस चौपाई में गायत्री मन्त्र का भाव भी समाहित है और वही शक्ति प्रदान करता है। यह एक सिजरा भी है जिसके माध्यम से हम अपने गुरू एवं उनके गुरूदेव की वन्दना करते हुए उनका आशीर्वाद प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। अपने गुरूदेव फिर उनके गुरूदेव की वन्दना करते हुए यह श्रृंखला शीर्ष तक पहुँच जाती है और हमें गुरू परम्परा के सभी गुरूओं का आशीर्वाद मिलने लगता है।

छठवीं चौपाई के माध्यम से हम अपने गुरूदेव के गुणों का ध्यान एवं मनन करते हैं कि वे कितने शक्तिशाली और सामर्थ्यवान हैं। जब हम सदगुरू या ईश्वर जिसकी उपासना करते हैं, उनके गुणों का गुणात्मक ध्यान करते हैं, लगातार ध्यान करने से उनके गुणों की शक्ति हमारी ओर प्रवाहित

होने लगती है और उस शक्ति के दिव्य प्रकाश से हमारे अन्दर व्याप्त अंधकार रूपी दुर्गुण दूर भागने लगते हैं और सद्गुणों का विकास होने लगता है। ऐसे समर्थ सदगुरू के आगे जो भी नतमस्तक है वे साधक भी धन्य है।

सातवीं, आठवीं, नौवीं चौपाइयों में अध्यात्म के मूल तत्व को बताया गया है। ईश्वर सब जगह है किन्तु जहाँ निश्छल प्रेम की पराकाष्ठा होती है वहाँ वे स्वयं प्रकट होते हैं और उन साधकों के हृदय में अपना निवास स्थान बना लेते हैं। सम्पूर्ण अध्यात्म की नींव सदाचरण आधारित प्रेम पर रखी है। ईश्वर को केवल प्रेम ही प्रिय है। वैसे तो आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुँचने के अनेक मार्ग हैं किन्तु सबसे सशक्त मार्ग प्रेम ही है, जो इस तथ्य को समझ गया है वह जीवन के लक्ष्य को भी समझ गया। जब साधक प्रेम से लबालब भर जाता है तो उसे सबमें ईश्वर का ही रूप दिखने लगता है और सबकी सेवा ईश्वर रूप में करने लगता है। वही सच्चा साधक है और उसे हम सब प्रणाम करते हैं।

दसवीं चौपाई में गुरू के अत्यन्त कोमल स्वभाव का वर्णन है। जब कोई शिष्य गुरू की शरण में होता है तो वे उसके दोषों को, गलतियों को क्षमा कर देते हैं। उनका केवल एक ही लक्ष्य होता है कि वे हर सम्भव अपने शिष्य की रक्षा करे, उसका कल्याण करें।

ग्यारहवीं चौपाई में शिष्य की साधना किस प्रकार होनी चाहिए इसको समझाया गया है। शिष्य के जीवन का केवल

एक ही धर्म, एक ही व्रत और एक ही नियम है कि उसका अपने गुरू के चरणों में अनन्य प्रेम, श्रद्धा– विश्वास एवं समर्पण होना चाहिए जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री के लिए पति ही उसका परमेश्वर है उसके जीवन का एक ही धर्म है पति की सेवा। वही सम्बन्ध गुरू शिष्य का और भगवान तथा भक्त का होता है।

कबीर दास जी ने भी यही कहा है 'हरि मोर पिउ मैं हरि की बहुरिया'।

गुरू में उसकी निष्ठा एवं समर्पण अत्यन्त गहरा होना चाहिए। गुरू की आज्ञापालन करने की इच्छा इतनी आत्मिक होनी चाहिए कि गुरू को मुँह से कुछ कहना न पड़े और शिष्य उनकी इच्छानुसार चल सके।

बारहवीं चौपाई 'मोर सुधारहुँ' के माध्यम से शिष्य सदगुरू से प्रार्थना करता है कि वे दया एवं कृपा के सागर हैं, कृपा करने से कभी चूकते नहीं है अतः शिष्य बारम्बार प्रार्थना करता है कि गुरूदेव उसका हर तरह से सुधार करें।

तत्पश्चात अगली चौपाई में शिष्य कहता है कि हे नाथ मैं सभी साधनों से विहीन हूँ। न मेरे अन्दर भक्ति है न शक्ति है तमाम अवगुण अलग से भरे पड़े हैं फिर भी आपने मुझे दीन हीन जानकर मेरे ऊपर कृपा की।

चौदहवीं चौपाई में शिष्य कहता है कि परम पूज्य गुरूदेव अब जब आपने मेरे ऊपर इतनी कृपा की है कि मेरा जीवन लक्ष्य प्राप्ति की ओर उन्मुख हुआ है तो मेरे अन्दर व्याप्त

दोषों को दूर करने की मुझे शक्ति प्रदान करें। हम राग–द्वेष, माया–मोह सब त्याग कर सिर्फ आपके ध्यान में लीन रहें और सबकी ईश्वरीय रूप में सेवा करते हुए अपनी साधना कर सकें।

पन्द्रहवीं चौपाई में यह स्पष्ट किया गया है कि सदगुरू की शरणागत हुए बिना मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति असम्भव है। गुरू की शरण में आये बिना बड़े से बड़े देवता भी इस भवसागर को पार करने में समर्थ नहीं है तो हम तो तुच्छ प्राणी हैं। अतः हमें अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सदगुरू की शरण में आना आवश्यक है।

सोलहवीं चौपाई का भाव यह है कि आज के युग में नाम का बड़ा महत्व है। अपने आराध्य का नाम लेने मात्र से ही भवसागर आसानी से पार किया जा सकता है। नाम का यह महत्व हृदय में विचार करके देखिए।

सत्रहवीं चौपाई में यह कहा गया है कि सन्तों का सहज स्वभाव है कि वे इस संसार में जनहित के लिए स्वयं कष्ट सहते हैं और लोक कल्याण में लगे रहते हैं।

ऐसे अपने गुरूदेव/इष्टदेव के नाम जप से हम इस संसार रूपी सागर को सहज रूप में ही पार कर सकते हैं।

अन्त में जब ऐसे समर्थ सदगुरू का हाथ हमारे सिर पर आशीर्वाद स्वरूप है फिर हे दास तुम्हें जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं हो सकती।

हरि ऊँ तत्सत्, हरि ऊँ तत्सत्, हरि ऊँ तत्सत।

।। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

इन चौपाइयों का वास्तविक लाभ उठाने के लिए इन्हें आत्मसात करना आवश्यक है। आत्मसात करने के लिए आत्मनिरीक्षण आवश्यक है अतः सहज संदर्भ हेतु 'आत्मनिरीक्षण' की प्रतिलिपि संलग्न है। उक्त वर्णित प्रतिलिपि में बताए हुए आत्मनिरीक्षण के द्वारा समय–समय पर अपनी आध्यात्मिक प्रगति का निरीक्षण करते रहना है। तदनुसार अपने अनुभव संरक्षक श्री कृष्ण दयाल जी को सूचित करें।

आत्म–निरीक्षण

वर्तमान युग में हम देखते हैं कि बहुधा प्राणी सांसारिक उपलब्धियों को ही अपनी प्रगति का लक्ष्य मानकर उसी प्रकार के क्रिया–कलापों में लिप्त रहता है। यही कारण है कि उसके मन में लोभ, मोह, स्वार्थ आदि प्रवृत्तियाँ इतनी बलवती हो जाती हैं कि वह उनकी पूर्ति के लिए हर सम्भव– असम्भव प्रयास करता रहता है। छल, कपट, झूठ, बेईमानी, चोरी, हिंसा आदि करके भी वह अपने को गलत नहीं मानता और इन कार्यों को आवश्यक समझने लगा है। जिससे सात्विक बुद्धि का निरन्तर अभाव होता जा रहा है। तामसी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि प्रबुद्ध जीवी अभावग्रस्त और एकाकी पड़ता जा रहा है और अनैतिक तत्व हर प्रकार से सम्पन्न एवं समर्पित दिखाई देते

हैं किन्तु वास्तविक रूप में वह क्षुब्ध दिखाई देते हैं और यह सब कुछ दिनों में उसकी मानसिक शान्ति छीन लेते हैं।

भावों की पवित्रता मानसिक शुद्धि से आती है और बिना उसके सुख शान्ति सम्भव नहीं है हमें मानसिक सन्तोष प्राप्त करने के लिए विचारों और भावों को पवित्र रखना होगा। अपनी शुचिता के लिए आत्म–निरीक्षण आवश्यक है। मन की शुद्धि के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय निम्न प्रकार है –

1. शुद्ध आहार,
2. ईश्वरोपासना,
3. कर्तव्य–पालन,
4. परोपकार।

अतः हमें नियम पूर्वक एकान्त में बैठकर कुछ क्षण आत्म–निरीक्षण के लिए देना चाहिए। हमको यह देखना है कि आज हमने क्या भोजन किया, उसका दैनिक जीवन में क्या प्रभाव पड़ा, किस प्रकार के विचार आये, पूजा में क्या हालत रही, दिन भर क्या गलतियाँ की और अपने कर्तव्य का दायित्व किस सीमा तक पालन किया, ऐसा करने में क्या त्रुटियाँ हुईं। दिन भर की पूरी स्थिति की समीक्षा करनी है फिर उसके लिये प्रायश्चित करना एवं ईश्वर से प्रार्थना करना कि हमसे जो त्रुटियाँ हुई हैं उनको वह क्षमा करें और मेरे ऊपर पूरी निगरानी रखे ताकि वह त्रुटियाँ दुबारा न हों। यह क्रिया रात के सोते समय और दूसरे दिन प्रातः उठने पर करनी होगी। इस सम्बन्ध में पूज्य गुरूदेव ने एक पुस्तक

"नर–नारी सहयोग" लिखी है। इसके मुख्य अंश 'व्यावहारिक आध्यात्म' पाठ में साधकों की सुलभता के लिए दिये गये हैं। जिनको निरन्तर पाठ करने से उनको लाभ होगा और ईश्वरीय सहायता प्राप्त होती रहेगी।

आत्म–निरीक्षण से प्राणी को आत्म–शुद्धि का बीज मन्त्र प्राप्त होता है ओर निरन्तर अभ्यास करते–करते नये स्वर्ण की भाँति अपने मन को शुद्ध कर लेता है।

कृष्णदयाल

भजन–1

गुरुदेव तेरे चरणों की रज धूल जो मिल जाये।

सच कहता हूँ गुरुदेव, तकदीर बदल जाय।।

गुरुदेव तेरे ....

यह मन बड़ा चंचल है, कैसे मैं भजन करूँ।

जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचलता है।।

गुरुदेव तेरे ....

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन–रात बरसती है।

इक बूँद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये।।

गुरुदेव तेरे ....

नजरों से गिराना ना, चाहे जो भी सजा देना।

नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल है संभल पाना।।

गुरुदेव तेरे ....

गुरुदेव इस जीवन की बस एक तमन्ना है।

तुम सामने हो मेरे जब अन्त समय आये।।

गुरुदेव तेरे चरणों की रज धूल जो मिल जाये।

सच कहता हूँ गुरुदेव, तकदीर बदल जाय।।

गुरुवर तेरे चरणों ....

भजन–2

मेरा आपकी दया से सब काम हो रहा है,

करते हो तुम गुरूजी मेरा नाम हो रहा है।

मेरा आपकी..

मै तो नहीं था काबिल बेड़ा पार कैसे पाऊँ

टूटी हुई वाणी से गुनगान कैसे गाऊँ

तेरी ही प्रेरणा से सब काम हो रहा है।

मेरा आपकी..

जीवन के हर सफर में तूने दिया सहारा,

मेरी जिंदगी बदल दी तूने करके इक इशारा,

तेरा करम ये मुझ पर सरेआम हो रहा है।

मेरा आपकी..

पतवार के बिनाही मेरी नाव चल रही है,

हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है,

करता नहीं मैं कुछ भी सब काम हो रहा है।

मेरा आपकी..

तूफान आंधियों में तूने ही मुझको थामा,

तुम कृष्ण बनकर आए मैं जब बना सुदामा,

एहसान पर ये तेरा एहसान हो रहा है।

मेरा आपकी..

भजन–3

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में
मेरा निश्चय एक यही एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का सब भार तुम्हारे हाथों में
अब सौंप...
यदि मानुष का मुझे जनम मिले तो श्री चरणों का पुजारी बनूँ
इस पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में
अब सौंप...
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ ज्यो जल में कमल का फूल रहे
मेरे गुण दोष समर्पित हो गुरूदेव तुम्हारे हाथों में
अब सौंप...
जब जब संसार का कैदी बनूँ निष्काम भाव से भजन करूँ
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ गुरूदेव तुम्हारे हाथों में ।
अब सौंप...
हममे तुममे बस भेद यही हम नर और तुम नारायण हो
हम हैं संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में
अब सौंप...

सार्वभौम प्रार्थना

हे भगवान! हमारे बड़े से बड़े नेता से लेकर छोटे से छोटे सभी नेताओं को एवं बड़े से बड़े कर्मचारी से लेकर छोटे से छोटे सभी कर्मचारियों को सुमति और सद्बुद्धि दें। — (3)

हे भगवान। सारे संसार का वायु मण्डल शुद्ध पवित्र एवं सुख और शान्ति का देने वाला हो तथा घर घर में सदाचार का वास हो —— (3)

हे भगवान। आप सर्वशक्तिमान हैं। आपकी दया व कृपा से ऐसा ही हो। ऐसा ही हो। ऐसा ही हो। —— (3)

ऊँ शान्तिः ऊँ शान्तिः ऊँ शान्तिः

श्री गुरूवे नमः

विजयादशमी (दशहरा) के विशेष अवसर पर

आज हम सब दशहरा के पावन पर्व पर एकत्रित हुये हैं। हमारे परम पूज्य गुरूदेव श्री चच्चा जी महाराज उच्चकोटि के सिद्ध गृहस्थ सन्त थे। उन्होंनें सदाचार को अपनी साधना–पद्धति का मूल आधार बनाया। उनकी सदाचार की परिभाषा में समग्र रूप से आचार–विचार की पवित्रता तथा व्यवहार की व्यापकता का पूर्ण समावेश था।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज ने स्वयं जीवन भर कठोर साधना की, किन्तु अपने शिष्यों से कभी कठोर साधना के लिये नहीं कहा। सदाचार एवं कर्तव्य पालन पर जोर देते हुये केवल निश्चित समय पर पूजामें बैठने पर विशेष बल दिया। यह भी कहा कि मन लगे या न लगे इसकी चिन्ता मत करो, पर समय की पाबन्दी का ख्याल रखना हर साधक के लिये आवश्यक है। आध्यात्मिक पक्ष के साथ–साथ वह अपने प्रत्येक शिष्य की सांसारिक जगत् में उन्नति के लिये भी प्रयत्नशील रहते थे।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज ने अध्यात्म क्षेत्र में कुछ मूलभूत परिवर्तन किये, उनमें से एक पितृपक्ष में होने वाले सांसारिक तर्पण के स्थान पर दशहरा के अवसर पर आध्यात्मिक तर्पण प्रारम्भ करना था। प्रायः लोग पितृपक्ष के दौरान परम्परागत श्राद्ध द्वारा पितरों का तर्पण करते हैं जो

कि केवल कर्म काण्ड तक ही सीमित रह जाता है, किन्तु पूज्य गुरूदेव ने इसका स्वरूप बदला और दशहरे के अवसर पर सामूहिक आध्यात्मिक श्राद्ध तर्पण का अलौकिक एवं अदभुत् कार्यक्रम आरम्भ कर पितरों का वास्तविक श्राद्ध एंव तर्पण कराया। इस अवसर पर वह दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये ईश्वर से स्वयं प्रार्थना करते एवं सभी सत्संगी भाईयों से कराते थे। इस प्रकार उन्होंने बाह्य कर्म काण्ड के स्थान पर अर्न्तमन से वास्तविक श्राद्ध देने की प्रक्रिया आरम्भ की।

पूज्य गुरूदेव द्वारा प्रारम्भ की गयी इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुये आज हम सब पूज्य गुरुदेव के ध्यान में स्थित होकर दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करेंगे।

आध्यात्मिक तर्पण एवं शान्ति पाठ

(1) हे गुरूदेव आप बड़े दयालु एवं कृपालु है, हमसे जाने अनजाने में जो गल्तियाँ हुई हों, उनके लिये आप हमं क्षमा प्रदान करने की कृपा करें। आप हमें इतनी शक्तियाँ एवं अनन्त आनन्द प्रदान करें जिससे हम अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से पालन करने में समर्थ हो।

जो चेतन को जड़ करहि, जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि, भजहि जीव ते धन्य ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(2) हम लोग उन महान सन्तों से, जो इस संसार से विदा हो चुके हैं, वे ब्रह्माण्ड में जहाँ कहीं भी हो, उनसे ये प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपना आर्शीवाद प्रदान करें।

मम दरसन फल परम अनूपा,
जीव पाय निज सहज सरूपा ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(3) हम लोगों से सम्बन्धित जो लोग इस संसार से विदा हो चुकेहैं वे ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में किसी भी अवस्था में हो उनकी आत्मा की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करते हैं।

सन्मुख होहि जीव मोहि जबही,
जन्म कोटि अघ नासहि तबही ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(4) हम लोग अपने माता पिता व अपनी सहधर्मी के माता पिता जो इस संसार से विदा हो चुके हैं वे ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में किसी भी अवस्था में हो उनकी महान आत्मा की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करते हैं।

यह गुन साधन ते नहि होई।
तुम्हरी कृपा पाय कोई कोई ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(5) हम लोग उन सभी नेताओं के लिये जो इस संसार से विदा हो चुके हैं वे ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में, किसी भी अवस्था में हो, उनकी आत्मा की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करते हैं।

मोर सुधारहु सो सब भाँति, जासु कृपा नहि कृपा अघाती ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(6) हम लोग सभी जीव–जन्तुओं का एवं जहाँ तक उनका विस्तार हो जो इस संसार से विदा हो चुके हैं और ब्रह्माण्ड में किसी भी अवस्था या स्थिति में हो उनकी आत्मा की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करते हैं।

सिया राममय सब जग जानि, करहु प्रणाम जोरि जुग पानि ।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

(7) हम लोग (उनके नाम) जो हाल ही में इस संसार से विदा हो चुके हैं वे ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में किसी भी अवस्थ या स्थिति में हो उन सबकी आत्मा की शान्ति के लिये शान्ति पाठ करते हैं।

गुरू बिन भव निधि तरहि न कोइ।
जो विरंचि शंकर सम होई।।3।।

2 मिनट का आन्तरिक अभ्यास

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः (3)

श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम

ब्रह्मलीन परमसंत श्री कृष्णदयाल जी (पापा जी)
11.07.1928 – 30.12.2012

।। सोई जानइ जेहि देहु जनाई, जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ।।

परम संत श्री कृष्ण दयाल जी का जीवन दर्शन

परम सन्त श्री चच्चा जी महाराज के पुत्र परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी, जो कि आध्यात्मिक विद्या से पूर्ण सराबोर है, प्रतिक्षण अपने गुरुदेव के ध्यान में लीन रहते हुए अपने समक्ष आये हुए लोगों के उद्धार में अनवरत लगे रहते है। पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज की उन पर अनन्य कृपा है। उन्होंने अपने शिष्यों के समक्ष अध्यात्म के व्यवहारिक पक्ष को रखा और साधना को अत्यन्त सरल एवं सहज बना दिया, जिससे उनके शिष्यों को अध्यात्म पथ की कठिनाइयों को झेलना न पड़े और वे सहज रुप में जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें । कर्तव्य पालन और सदाचार के मार्ग पर चलते हुए अपने गुरु में पूर्ण समर्पण साधक के अध्यात्म–मार्ग पर बढ़ने के लिए आवश्यक है। उनकी बतायी हुई साधना अत्यन्त सरल एवं सहज है।

व्यवहारिक अध्यात्म के सम्बन्ध में वे कहते हैं कि साधना जब तक व्यवहार में न उतर जाये तब तक उसका कोई विशेष महत्व नहीं है। उनके अनुसार साधना जीवन का कोई खण्ड या अंश नहीं है। यह तो समग्र जीवन है। उठना – बैठना , बोलना , हँसना , आचार–व्यवहार इत्यादि सभी साधनामय होना चाहिए । तभी साधना सार्थक और सहज होती है। धर्म कोई विशिष्ट कार्य पूजा या प्रार्थना करने में नहीं है वह तो ऐसे ढंग से जीने में है कि सारा जीवन ही पूजा और प्रार्थना बन जाये।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज राम भक्त थे और उन्ही की भाँति मर्यादा में रहते हुए सबके प्रति कर्तव्य पालन करते हुए साधनारत रहते थे। निष्काम कर्म उनके जीवन का लक्ष्य था । मानवता की सेवा को ही ईश्वर पूजा समझते थे। सदाचार और कर्तव्यपालन के मार्ग पर चलते हुए निष्काम कर्म द्वारा साधक ब्रह्म की आत्मवयता को प्राप्त कर सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज के पुत्र परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी ने विरासत में मिली आध्यात्मिकता को स्वयं की साधना से ऊँचाइयों के उस शिखर पर पहुँचाया है जो सुगमता से प्राप्त नहीं होती। पूज्य चच्चा जी के सम्पूर्ण जीवन को उन्होंने अपने रुप में सजीव कर दिया। उनके एक-एक वचन एक-एक उपदेश परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी के रोम-रोम में व्याप्त है। पूज्य चच्चा जी के स्थूल शरीर छोड़ने के पश्चात् उनके सभी शिष्य अधीर हो उठे थे, परन्तु उनके पुत्र परम् सन्त श्री कृष्ण दयाल जी के रुप में चच्चा जी महाराज पुनः अपने शिष्यों एवं भक्तों के कल्याण के लिए जीवन्त हो उठे है।

पूज्य चच्चा जी महाराज की तरह ही उनके पुत्र ने जीवन में अनेक कष्टों को सहन किया, परन्तु अपने पूज्य गुरुदेव के ध्यान में स्थिर होकर आध्यात्मिकता के मार्ग से कभी विचलित नही हुए। प्रत्येक संकट की घड़ी के पश्चात् उनकी आध्यात्मिक साधना और अधिक उन्नत होती गयी ।

पूज्य गुरुदेव की भांति इन्होंने भी स्वयं को लोगों से छिपाकर रखा। ऊपर से स्वयं सांसारिकता में फँसे हुए प्रदर्शित करते हुए दूसरों के कष्टों को अपने ऊपर लेकर हंसते – हंसते सहन करना ही उनका स्वभाव है। वे अपने शिष्यों के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहते है। वह अपने शिष्यों का रुख सांसारिकता और भौतिकता से हटकर पूरी तरह आध्यात्मिकता की तरफ मोड़ने के लिए सदैव प्रयासरत् रहते है। पूज्य चच्चा जी महाराज के इन शब्दों को , कि " भगवान के भक्त माया के अधीन नहीं होते माया स्वयं उनके सामने हाथ जोड़े खड़ी रहती है।" अपने शिष्यों के अपनी साधना के द्वारा अनुभव कराया है।

(श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव)

श्री गुरुवे नमः

सन्त भवानीशंकर सत्संग आश्रम (उरई), इलाहाबाद

व्यवहारिक अध्यात्म

859 पुराना कटरा , इलाहाबाद

पूज्य श्री श्री कृष्ण दयाल का अन्तिम – सन्देश

जीवन और मृत्यु जीवन कम का एक छोटा सा अध्ययन मात्र है , इसलिये दोनो को घनिष्ठ सहचर मानकर चलना चाहिये। मृत्यु एक सत्य है। जिसे सबने स्वीकार किया है इसलिये इसको सहज रुप में लेना चाहिये। जन्म–मृत्यु का सिद्धान्त अकाटय है, जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। जब तक यह संसार है जन्म मृत्यु का चक निरन्तर चलता रहेगा।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज ने इस प्रकिया को एक सहज रुप दिया है जो लोग समर्पण के बाद निष्काम भाव से कर्म करते है वे जीवन मुक्त रहते है। ऐसी जीवन मुक्त आत्माएँ आवागमन रहित होती है एवं गुरुदेव में लीन रहती हैं गुरुदेव के आदेश पर ऐसी आत्माये आवश्यकतानुसार जन–कल्याण के लिये दिव्य जन्म प्राप्त करती है। साधारण मनुष्यों का जन्म कर्म प्रकृति एवं भोग वासनाओं के अनुकूल रहता है, परन्तु ब्रहमलीन जीवन मुक्त आत्माये स्वच्छन्द अपनी इच्छानुसार जगत के कार्यो को करती है उसमें प्रकृति का व्यवधान नहीं रहता क्योकि वे आत्माएं कर्मवश कार्य नहीं

करती । शरीर का मर्यादा रखते हुये वे जो कर्म करते भी है तो वे निष्काम भाव से होते है और दिव्य कर्म होते है।

जीवन इस प्रकार जिये कि संसार में रहते हुये अपने सभी कर्तव्यों को निष्काम भाव से करते रहे और जब मृत्यु आये तो शान्ति एवं सम्मान से उसका स्वागत किया जाये ।

मैं संसार से किसी भी वक्त विदा लेने को तैयार हूँ। हर घड़ी उसका स्वागत है। यद्यपि मेरी साधना निरन्तर चलती रहती है और उसमें किसी भी औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है, फिर भी मेरी बीमारी के दौरान मुझको आध्यात्मिक आवरण में रखा जाये और जहां तक संभव हो, ऐसे लोग जो आध्यात्मिकता से सरोबार हो मेरे आस–पास रहे, क्योंकि इससे सशक्त आध्यात्मिक वातावरण रहे। इसका तात्पर्य यह नही है कि और लोग मुझसे न मिल पाये । मेरा इलाज केवल कष्टो को सहन करने की शक्ति प्रदान होने तक सीमित रखा जाये । जितना जरुरी हो उतना इलाज कराया जाये। अनावश्यक व्यय न किया जाये , फिर जैसी गुरुदेव की इच्छा।

समाज की असन्तोषजनक स्थिति को देखकर मुझे लगा कि यह स्थिति बिना ईश्वर एवं सन्तों की कृपा के ठीक नही हो सकती । ऐसी स्थिति में गुरुदेव के उपदेश जो कि सदाचार एवं कर्मयोग पर आधारित है बहुत प्रासंगिक हो गये है।

यद्यपि गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज सत्संग को केन्द्रित रखना चाहते थे फिर भी मेरे अनुरोध पर कुछ समर्पित साधकों को जिनकी साधना परिपक्व हो गयी है, को अध्यात्म की मूल धारा में जोडने की सहमति इस प्रतिबन्ध के साथ कि यह लोग मेरे निर्देशन में कार्य करेंगे प्रदान की । इससे गुरुदेव का कार्य आगे बढ़ता रहेगा एवं जन कल्याण होता रहे।

अतः 1995 में प्रथम चरण में एव 2006 में दूसरे चरण में मैने कुछ समर्पित लोगों को अधिकृत किया है, जिसकी विस्तत जानकारी मै समय – समय पर आप लोगों को देता रहा हूँ। ये सभी लोग अपना कार्य पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ कर रहे है। गुरुदेव की कृपा से इन लोगों को किसी भी प्रकार की कमी का अनुभव नहीं होगा , क्योंकि इन लोगों में अध्यात्मिक शक्ति का संचालन स्वतः होता रहेगा । सदाचार – आश्रम लखनऊ का योगदान भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ पर गुरुदेव मूर्ति रुप में विराजमान है जो कि आध्यात्मिक प्रेरण स्त्रोत है।

उपरोक्त केन्द्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत ये लोग गुरुदेव के सेवक के रुप में लोगों की ईश्वरीय रुप में निष्काम भाव से सेवा करते रहेंगे एवं समय–समय पर मुझसे सम्पर्क करते रहेंगे और मेरे दिये हुये निर्देशों का पालन करेंगे । सभी आध्यात्मिक केन्द्र अपनी व्यवस्था देखेंगे और अपने – अपने क्षेत्र में आध्यात्मिक कार्यकम का सम्पादन करेंगे । ये सभी

लोग एक दूसरे के साथ सामंजस्य रखते हुए, एक दूसरे का सम्मान करते हुये लोगों के समक्ष एक मिसाल कायम करेंगे एवं गुरुदेव के कार्य को आगे बढ़ते रहेंगे।

मेरा स्वास्थ ठीक न होने के कारण श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव मेरे सभी सांसारिक एवं आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह और सभी केन्द्रों का संचालन मेरे निर्देश्न में करते रहते है और बाद में भी यथावत् कार्य करते रहेंगे।

मैंने लोगों को कुछ आश्वासन दिये है मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूज्य गुरुदेव की कृपा से वह पूर्ण होंगे क्योंकि यह आश्वासन पूज्य गुरुदेव की पूर्ण सहमति से दिये गये है अतः वे भी इसका अनुपालन स्वयं सुनिश्चित करेंगे। आवश्यकता है गुरुदेव में दृढ़ विश्वास बनाये रखने की ।

मेरे एकमात्र पुत्र श्री विवेकानन्द के निधन के कारण एवं मेरे पौत्र श्री विभव के अमेरिका में अध्ययनरत होने के कारण संभवतः मेरे अन्त समय में उसका आना संभव न हो पाये। ऐसी स्थिति में श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव , जो मेरे दामाद है तथा आध्यतिमक पुत्र भी है, उनकी गुरुदेव में अटूट आस्था एवं समर्पण देखकर मेरी इच्छा है कि तमाम औपचारिकताओं को नजरअन्दाज करते हुये ये मेरा अन्तिम संस्कार करें, यदि इनको ऐतराज न हो और सामाजिक परिस्थितियाँ अनुकूल हो। यदि प्रिय विभव आ जाते है तो स्थिति दूसरी होगी, गुरुदेव की जैसी इच्छा हो।

यह संस्कार बहुत महत्वपूर्ण होता है और सक्षम आध्यत्मिक व्यक्ति द्वारा सम्पन्न होने पर इसके दूरगामी परिणाम होते है।

मेरे संसार से विदा होने के बाद यह सूचना सभी सम्बन्धित लोगों को दी जाये। जो आसानी से आ सके वह आये अन्यथा अपने स्थान पर शान्ति पाठ करें। आना–जाना इतना आवश्यक नहीं है जितना मानसिक रुप से इस कार्य के लिये आध्यात्मिक सम्पर्क जोड़ना।

यह सब कार्य किसी भी रीति से किया जा सकता है। यह तीन दिन में समाप्त होगा । इसमें उत्तरकाण्ड, चच्चा चरितम तथा गीता का पाठ होगा । साथ ही शान्ति पाठ एवं हवन भी होगा तेरही एवं बरसी एक साथ हो ताकि परिवार वालों का कोई शुभ काम रुक न सके इसमें (13+12) 25 ब्राह्मण भाग लेंगे । एक ब्राह्मण को पूरी पोशाक आदि तथा शेष को 1 तौलिया 1 बर्तन तथा 21 रुपये दिये जायेंगे । त्रयोदशी के दिन भी शान्ति पाठ होगा जिसमें घर के सभी लोग रहेंगे। प्रसाद वितरण होगा तथा कुछ लोगो को खाना भी खिलाया जायेगा। साल भर तक माह में एक बार उत्तरकाण्ड का पाठ तथा शान्ति पाठ होगा प्रसाद वितरण होगा तथा कुछ लोगो को खाना भी खिलाया जायेगा ।

मेरी धर्मपत्नी ईश्वरभक्त एवं पतिव्रता है । वह एक आदर्श नारी है उनमें सेवा भाव प्रधान है। मेरी भलाई के लिये उसने क्या नहीं किया यदि ऐसा करने में उससे कोई भूल

हुयी हो तो उसका उत्तरदायित्व मेरा है। बिना स्त्री के सहयोग के आध्यात्मिक मार्ग पर सुचारु रुप से चलना सम्भव नही है । इस सम्बन्ध में मै अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ कि मेरी पत्नी ने हर क्षण तथा हर परिस्थिति में मुझको अपना पूर्ण सहयोग दिया। इनकी साधना उच्चकोटि की है यह सबकी ईश्वरीय रुप में सेवा करती रहती है। इन पर परमात्मा गुरुदेव की विशेष दया एवं कृपा है और इनमें मुझसे भी अधिक श्रद्धा एवं विश्वास है। यह लोगों का मार्ग दर्शन करने में पूर्ण रुप से समर्थ है। मेरे आशीर्वाद से यह आवागमन एवं जन्म – मरण के बन्धन से मुक्त रहेंगी । मेरा सबसे विनम्र निवेदन है कि मेरे संसार से विदा लेने के बाद जो लोग मुझसे किसी प्रकार भी सम्बन्धित है वह इनको भी उस भाव– प्रेम से मानते रहेंगे एवं मार्गदर्शन लेते रहेंगे। लोग किसी भी प्रकार का शोक न मनाये, क्योंकि स्थूल शरीर छोड़ने के बाद आध्यात्मिक कार्य सूक्ष्म शरीर से होता रहता है और साधको के किसी भी प्रकार की कमी महसूस नही होगी । लोगो की श्रद्धा एवं निष्ठा के अनुसार समय–समय पर मेरी उपस्थिति का अनुभव होता रहेगा, यह भाव पक्ष की बात है।

मेरे लिये कोई स्मारक न बनाया जाये। सबसे बड़ा स्मारक एवं श्रद्धाजंलि यही होगी कि लोग गुरुदेव के बताये मार्ग पर दृढ़ता से चलते रहे और आपस में प्रेम सदभाव एवं सम्पर्क बनाये रखे।

अन्त में पूज्य गुरुदेव एवं उनके उत्तराधिकारी परम सन्त डॉ० जयदयाल एवं अन्य सन्तो को मै कोटि–कोटि प्रणाम करता हूँ कि मेरे दोनों भाई डॉ० स्वामी जी एवं डॉ० कृष्णा जी आध्यात्मिकता से पूर्ण सरोबार है और अपने – अपने निवास स्थान पर गुरुदेव के कार्य को आगे बढ़ा रहे है। डॉ० कृष्णा जी के निधन के पश्चात् उनकी पत्नी श्रीमती मंजू श्रीवास्तव उनका कार्य कर रही है। जिससे लोगो को आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता रहता है। मेरे आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ उनके साथ है।

पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज एक उच्चकोटि के सन्त थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त कठोर साधना की और अपने भक्तों के कष्टों को दूर करने के लिए अध्यात्म का अत्यन्त सरल एवं सहज रुप हम सबके समक्ष प्रस्तुत किया, जिस पर चलकर प्रत्येक साधक सुगमता से अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। ये हमारी आध्यात्मिक धरोहर है। हमारा उद्देश्य है कि उन्होंने जनहित के – लिये जो कार्य किया है वह आगे भी अनवरत रुप से चलता रहे। उरई में उनकी समाधि–स्थल है जहाँ पर उनके अनन्य भक्त बड़े भाव प्रेम से उनके दर्शन के लिये आते है, वहाँ उन्हें अपने कष्टों से मुक्ति मिलती है और अपार शान्ति का अनुभव करते है। अतः हमारा प्रयास है कि हम गुरुदेव की समाधि के उस पवित्र स्थल को धरोहर के रुप में संभाल कर रखे, जिससे आने वाले वक्त में भी लोग वहाँ पहुँचकर लाभ उठा सकें।

कुछ प्रेमी जनों के मेरे पास पत्र आ रहे है कि आप गुरुदेव की समाधि की उचित व्यवस्था कर दीजिये ताकि गुरुदेव के शिष्यों को किसी भी मौसम में कार्यक्रम करने में असुविधा न हो । इस सम्बन्ध में मुझको कहना है कि श्री जगदीश मिश्र जो कि गुरुदेव के शिष्य है उन्होंने स्वतः इस भूमि को उनकी समाधि के लिये प्रदान की थी , अतः मैं उनसे अनुरोध करुँगा कि वह वहाँ की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करे । मुझको बताया गया है कि वह किसी व्यक्ति विशेष के नाम भूमि नही करना चाहते। अतः मेरा सुझाव है कि एक ट्रस्ट बना लिया जाये जिससे गुरुदेव के अनुयायी और प्रेमीजन सदस्य हो और वह पूरी व्यवस्था निरन्तर देखते रहें। श्री सत्य नारायण शुक्ला जो गुरुदेव के अनन्य भक्त है और गुरुदेव की कृपा बराबर अनुभव करते रहते है उनसे मेरा अनुरोध है कि वह इस मामले में रुचि लेकर वहाँ की व्यवस्था ठीक से करा दें।

यदि मुझसे जाने अनजाने कोई गलती हुयी हो या मेरे किसी आचरण से किसी को आघात पहुँचा.हो तो उसके लिये मै क्षमा प्रार्थी हूँ।

यह आदेश मेरे पूर्व आदेश को निरस्त कर संशोधित किया जा रहा है। गुरुदेव सबकी रक्षा करें।

ऊँ शान्ति : शान्ति : शान्ति : ।।3।।

इलाहाबाद

दिनांक : 8-6-2011

प्रतिलिपि :

(कृष्णदयाल)

संरक्षक

1. श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव
   इलाहाबाद
2. सभी सम्बन्धित व्यक्तियों के लिये

पूज्य परम सन्त ब्रह्मलीन श्री कृष्णदयाल जी (पापा जी)
द्वारा अधिकृत शिष्य

(परम पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी साहब सत्संग को केन्द्रित रखना चाहते थे, परन्तु समाज की पतनोन्मुख स्थिति का अवलोकन कर एवं इन लोगों की पूज्य गुरु देव में अटूट निष्ठा एवं समर्पण को देखते हुये, इन लोगों को व्यवहारिक आध्यात्म की मूल धारा में जोड़ने की स्वीकृति, इस प्रतिबन्ध के साथ की कि, "ये लोग मेरे निदेशन में केन्द्रीकृत व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य करेगे, एवं ईश्वरीय रुप में निष्काम भाव से जनकल्याण एवं अपने अपने क्षेत्र में आध्यात्मिक कार्यकम का सम्पादन करेगें", प्रदान की ।)

(कृष्णदयाल)

परम सन्त श्री कृष्ण दयाल जी पापा जी द्वारा अधिकृत व्यक्ति

प्रथम चरण (1995)

श्री काशी प्रसाद जी (लखनऊ) | डा0 के. वी. लाल (आगरा) | श्री ओम प्रकाश (इलाहाबाद)

द्वितीय चरण (2006)

श्री राधा कृष्ण खरे (लखनऊ) | डा0 सत्य प्रकाश (उरई) | श्रीमती मुन्ना जी (कानपुर)

सुश्री दया गुप्ता (जालौन) | श्री महेन्द्र कुमार (शिवपुरी) | श्री दिलीप कुमार (इलाहाबाद)

पूज्य गुरुदेव के द्वारा स्थापित कन्द्रों में होने वाले

वार्षिक कार्यकम

क	कार्यकम	समय	स्थान
1.	पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस समारोह	कार्तिक शुक्ल पंचमी	श्री काशी प्रसाद खरे सदाचार आश्रम 628, राजेन्द्र नगर नवा मार्ग लखनऊ
2.	पूज्य गुरुदेव श्री चच्चा जी महाराज ने गुरुदेव श्री लालाजी महाराज का जन्म दिवस	बसन्त पंचमी	श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव 12/30 द्वारिका पुरी कॉलोनी म्योर रोड, इला0 उ0 प्र0
3.	गुरुदेव का आध्यात्मिक कार्यकम	25 दिसम्बर	श्री महेन्द्र कुमार 31/292, गालव दूध डेरी के पीछे , नरेन्द्र नगर, छतरी रोड शिवपुरी , म0 प्र0

4.	आध्यात्मिक कार्यकम	सितम्बर माह का द्वितीय शनिवार	श्री मुन्ना LIG, 2195 , आवास विकास कल्याणपुर , पनकी रोड, कानपुर
5.	रामनवमी	तिथिअनुसार	उरई समाधि स्थल
6.	पूज्य गुरुदेव का निवणिदिवस	तिथिअनुसार	उरई समाधि स्थल

पूज्य पापा जी के अन्तिम समय बारम्बार जपी जाने वाली चौपाइयाँ

1. कठिन भूमि कोमल पद गामी, कवन हेतु वन विचरहु स्वामी।
2. जो चेतन को जड़ करहि जड़हि करै चैतन्य।
   अस समर्थ रघुनायकहि भजहि जीव ते धन्य।।
3. मम दरसन फल परम अनूपा, जीव पाय निज सहज सरुपा।
4. अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति, सब तजि भजन करहुं दिन राति।
5. जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे, विधि हरि संभु नचावनिहारे ।
6. जो तुम्हरे मन अति सन्देहू, तो किन जाहू परीक्षा लेहू।
7. राधे तू बड़भागनी , कौन तपस्या कीन ।
   तीन लोक चौदह भुवन, के पति तुम्हरे आधीन ।।
8. तू राम राम जप, तेरा क्या जाएगा।।